विद्या- भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

नीतू कुमारी, विषय- हिंदी, वर्ग-तृतीय

पुनरावृति

दिनांक-10-01-2022 एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

सुप्रभात बच्चों,

गृहकार्य-

दिए ,गए कविता अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें तथा याद करें।

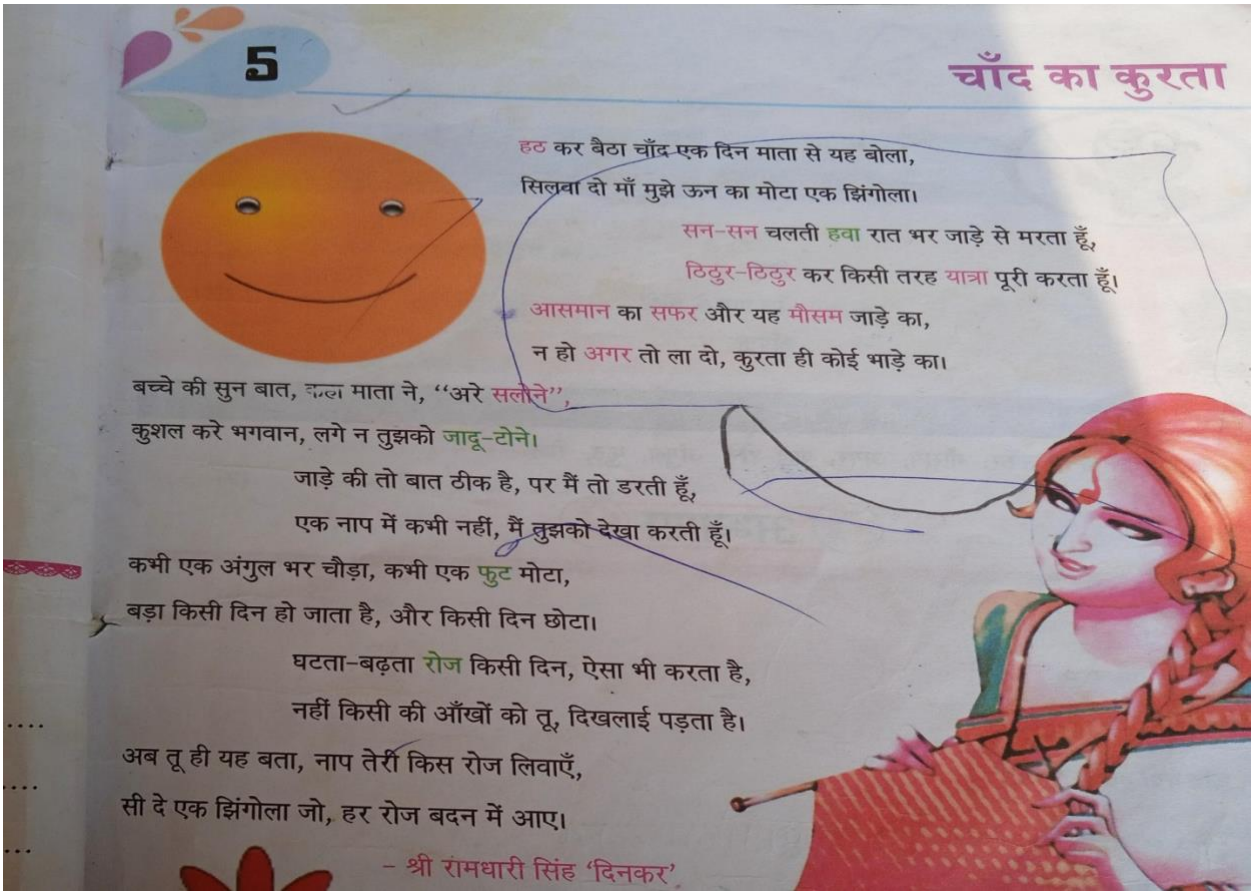

5

चाँद का कुरता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन माता से यह बोला,
सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।
सन-सन चलती हवा रात भर जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।
आसमान का सफर और यह मौसम जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो, कुरता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात, कहा माता ने, "अरे सलोने",
कुशल करे भगवान, लगे न तुझको जादू-टोने।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं, मैं तुझको देखा करती हूँ।
कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।
घटता-बढ़ता रोज किसी दिन, ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आँखों को तू, दिखलाई पड़ता है।
अब तू ही यह बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएँ,
सी दे एक झिंगोला जो, हर रोज बदन में आए।

– श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'